International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2023; 3(2): 98-107
www.educationjournal.info
Received: 13-07-2023
Accepted: 18-08-2023

आसमां खातून
शोध छात्रा, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, उत्तर प्रदेश, भारत

डॉ0 नीलू सिंह
शोध निर्देशिका, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
आसमां खातून
शोध छात्रा, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रारंभिक बचपन के बौद्धिक विकास पर शैक्षिक संसाधनों का प्रभाव संभल जनपद के 3 से 6 बर्ष के बालकों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन

आसमां खातून एवं डॉ0 नीलू सिंह

सारांश
डा0 हेवार्ड के अनुसार प्रभृत्त विद्वान शिक्षा को अत्यन्त प्रभावशाली साधन मानते है। वस्तुतः शिक्षा एक उपयुक्त वातावरण है। उनका कथन है कि वंशानुक्रम चाहे जैसा हो यदि उपयुक्त शिक्षा दी जाएगी, तो बालक के व्यक्तित्व का निर्माण हम अपनी इच्छानुसार कर सकते है। कुछ विद्वान ठीक इसके बिरुद्ध बालक के निर्माण का सारा श्रेय वंशानुक्रम को ही देते है। इन दोनो अनिवार्य दृष्टिकोणों के साथ इन महोदय का मध्यवर्गीय दृष्टिकोण भी है, जो कही अधिक वैज्ञानिक और शुद्ध है। उनका विश्वास है कि बालक का स्थान अपने विकास में स्वयं सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। वह अपने वंशानुक्रमीय गुणो को उपयुक्त शिक्षा के माध्यम से सदुपयोग कर सुन्दर व्यक्तित्व का निर्माण कर सकता है। इस अध्ययन के अन्तर्गत बच्चो का जो अपने आप सारा कार्य स्वयं करते है या नही करते है? तो उनकी संख्या इस प्रकार है। प्राथमिक में 30% एवं मदरसा मे भी 30% विद्यार्थी स्वयं अपना कार्य करना पसन्द करते है कुछ विद्यार्थी स्वयं पढ़ना पसन्द समझते है। प्राथमिक 25% एवं मदरसा के 20% है। सहयोग के द्वारा भी विद्यार्थी पढ़ना पसन्द समझते है। 10% प्राथमिक एवं 4% मदरसा मे क्रमशः अपना वस्त्र स्वयं पहनने वालो में विद्यार्थियों की संख्या प्राथमिक एवं मदरसा दोनो मिलाकर 13% है।

कूटशब्द: शिक्षा, बौद्धिक विकास, मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रस्तावना
पूर्व बाल्यावस्था, जिसे बचपन भी कहा जाता है, एक व्यक्ति के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है जो उसके बौद्धिक विकास के लिए आधार रखता है। इस दौरान, विद्यालय वातावरण का महत्वपूर्ण भूमिका होती है और यह विकसित होने वाले बच्चे के बौद्धिक गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है। यहां कुछ मुख्य प्रभाव हैं:

1. **शिक्षा का महत्व:** विद्यालय वातावरण में बच्चे विभिन्न विषयों की अध्ययन करते हैं और इससे उनका बौद्धिक विकास होता है। शिक्षा के माध्यम से वे नए विचारों और ज्ञान का सामर्थ्य बढ़ाते हैं जो उनके बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करता है।
2. **सामाजिक संबंध और उदारता:** विद्यालय वातावरण में बच्चे अन्य बच्चों के साथ इंटरेक्ट करते हैं जो उनके सामाजिक संबंधों को बढ़ाता है। यहां, वे सहयोग, समर्थन, और समर्पण सीखते हैं, जो उनके बौद्धिक विकास में मदद करता है।
3. **शिक्षकों का प्रभाव:** अच्छे शिक्षकों का प्रभाव बच्चों के बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण होता है।

यदि शिक्षक उत्कृष्टता की प्रेरणा प्रदान करते हैं और बच्चों को बुद्धिमत्ता की ओर प्रवृत्त करते हैं, तो इससे उनका बौद्धिक विकास सुनिश्चित होता है।

4. **कौशल और रूचियां:** विद्यालय में बच्चों को विभिन्न क्षेत्रों में कौशल विकसित करने का मौका मिलता है, जैसे कि खेल, कला, साहित्य, और अन्य गतिविधियां। इससे उनकी रूचियां प्रकट होती हैं और उन्हें अपनी पसंदीदा क्षेत्रों में विकसित करने का अवसर मिलता है।
5. **स्वतंत्रता का मौका:** विद्यालय वातावरण बच्चों को अपनी राय व्यक्त करने का मौका देता है और उन्हें स्वतंत्रता का अहसास कराता है। यह उन्हें नए और अनोखे विचारों को स्वीकार करने की क्षमता प्रदान करता है जो उनके बौद्धिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

इन प्रकार, विद्यालय वातावरण का प्रभाव पूर्व बाल्यावस्था के दौरान बच्चे के बौद्धिक विकास पर सकारात्मक हो सकता है, अगर यह एक सुरक्षित, सहयोगी, और प्रेरणादायक माहौल प्रदान करता है।

विद्यालय और बाल विकास: माता-पिता या परिवार के पश्चात बालक बालिकाओं के विकास पर विद्यालय का प्रभाव सबसे अधिक होता है कक्षा 1 से 11 तक बालक बालिकाएं 5 से 7 घण्टे तक सप्ताह में 5 दिन विद्यालय में उपस्थित रहते हैं। इन विद्यार्थियों की आयु 6 से 16 वर्ष के मध्य रहती है। इस तरह व्यक्ति के जीवन का छठा भाग विद्यालय में ही गुजरता है।

पूर्व माध्यमिक विद्यालय और बाल विकास: 1930 के पश्चात मनोवैज्ञानिक इस बात का गम्भीर अध्ययन करने लगे कि शिशु-शालाओं के अनुभवों का बालक-बालिकाओं के विकास पर बहुत प्रभाव पड़ता है। जो विनिम्न है

1. शिशु-शालाओं के कार्यक्रमों द्वारा छात्र-छात्राओं के अनुभव संवर्द्धित होते हैं।
2. बालक और वयस्कों में समरसता स्थापित होती है।
3. बालकों के व्यवहार में स्वतन्त्रता आती है तथा उनकी शारीरिक गतिविधियों और आत्म-अभिव्यक्ति को प्रेरणा मिलती है

कक्षा का वातावरण और बाल विकास

1. कुछ कक्षाओं में विद्यार्थी और अध्यापक मिलकर यह निश्चय करते हैं कि उन्हें क्या कार्य करना है? (प्रजातन्त्रात्मक कक्षा)
2. अन्य कक्षाओं में अध्यापक इस बात की घोषणा करता है कि छात्रों को क्या करना है? (प्राधिकारवादी - कक्षा)
3. अन्य कक्षाओं में जिनकी संख्या बहुत कम है, अध्यापक कार्य के सम्बन्ध में कोई संकेत नहीं देता, परन्तु बालक कोई संकेत देते हैं, तो स्वीकार कर लेता है (स्वतंत्र कक्षा)

अध्यापकों की भूमिका: माता-पिता के दृष्टिकोणों और मूल्यों में बहुत अन्तर पाया जाता है। 1947 तक अध्यापक तथा विद्यार्थी दोनों ही मध्यम वर्ग से संबंध रखते थे, इसलिए दोनों के दृष्टिकोण प्राय: समान थे। यदि बालक का संबंध निम्न वर्ग से होता है, तो अध्यापक और बालक के मूल्यों में खाई होती है। अध्यापक के व्यवहार का भी बालकों के मनोवैज्ञानिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। विशेष रूप से प्राथमिक कक्षाओं में तथा लोग अनुसन्धान प्रदर्शित करता है कि अध्यापक की स्वीकृति अस्वीकृति का प्रभाव भी बालक के स्व-सप्रत्यम पर पड़ता है और दोनों में 82 का सह सम्बन्ध होता है। दो अन्य अनुसन्धानों में ये बात पायी गयी

1. यदि बालक समझता है कि अध्यापकों की नजरों में वह ऊँचा है, तो उसकी ज्ञानोपलब्धि ऊँची होती है।
2. उच्च तथा मध्यम वर्ग के बालक विश्वास करते थे कि अध्यापक उनका मूल्यांकन ठीक-ठीक करते हैं, परन्तु निचले वर्ग के बालक ऐसा नहीं सोचते थे। इस कारण उच्च तथा मध्यम वर्ग के बालकों ने मूल्यांकन में ऊंचा स्थान प्राप्त किया ।

विद्यालयोपलब्धि तथा बाल विकास: विद्यालयों में छात्र-छात्राओं को विभिन्न विषयों के जो अंक प्रदान किए जाते हैं, उसके पक्ष तथा विपक्ष में विद्वानों द्वारा कई बातें कही गयीं हैं, जो कि निम्न हैं

1. इनसे विद्यार्थियों का पता चलता है कि उनकी प्रगति कैसी है?
2. माता-पिता तथा छात्र-छात्राओं के अभिभावकों को उनके संबंध में जानकरी देकर वे अपने कर्तव्य की पूर्ति करते हैं। अब माता-पिता तथा विद्यार्थी इस स्थिति में होते हैं कि भविष्य के संबंध में योजना बना सकें।
3. इनसे छात्रों को प्रेरणा मिलती है। विद्यार्थी अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए जी-तोड़ मेहनत करते हैं।
4. वे पुरस्कार और दण्ड का काम भी करते हैं। वे परिश्रम तथा अच्छे काम के लिए पुरस्कार तथा आलस्य तथा बुरे काम के लिए दण्ड का काम करते हैंइसके विपरीत में निम्न बातें:

a. अंक प्रसामान्य वक्र के अनुसार दिये जाते हैं। इसलिए बहुत कम विद्यार्थी अच्छे अंक प्राप्त करते हैं।
b. अधिकांश विद्यार्थी औसत अंक प्राप्त करते हैं। वर्षानुवर्ष विद्यार्थियों के साथ यही बात होती है।

प्रगतिशील देशों में कम अंक प्राप्त करने वाले को अनुत्तीर्ण न कहकर अपूर्ण प्राप्तांक कहा जाता है। इसका तात्पर्य है कि विद्यार्थी ने अपनी बुद्धि तथा योग्यता के अपेक्षा कम अंक प्राप्त किये हैं। विद्यालयोपलब्धि विद्यार्थी के आकांक्षा स्तर पर निर्भर करता है। आकांक्षा स्तर से तात्पर्य है - व्यक्ति ने भूतकाल में जो प्राप्त किया है, उसकी तुलना में वह भविष्य में क्या करना चाहता है।

विद्यालय का वातावरण: बाह्य वातावरण के अन्तर्गत वे सभी परिस्थितियाँ आती हैं. जो सामूहिक या मिश्रित रूप से प्राणी को प्रभावित करती हैं। ये परिस्थितियाँ मानव को चारों ओर से घेरे रहती है और उस परिस्थिति का अनुकूल दिशा में निरन्तर अपना प्रभाव डालती रहती हैं।

शिक्षा में वातावरण का महत्व: शिक्षा के क्षेत्र में वातावरण का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है, जो निम्न है

1. **बालक का क्रमशः** अपने परिवार, पास-पड़ोस खेल के मैदान तथा विद्यालय के वातावरण का प्रभाव पड़ता है। अतः अभिभावकों तथा अध्यापकों को परिवार और विद्यालय का वातावरण स्वस्थ एवं सुन्दर बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि परिवार का वातावरण अच्छा होता है, तो बालक का विकास भी भली-भाँति होता है। वातावरण बालक के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक जीवन पर अपना विशिष्ट प्रभाव डालते हैं। बालक के आचरण और व्यवहार को देखकर ही उसके वातावरण का अनुमान लगाया जा सकता है। शिक्षक बालक के वातावरण को ध्यान में रखकर ही बालक को शैक्षिक निर्देशन एवं प्रशिक्षण प्रदान कर सकता है।
2. वातावरण सम्बन्धी ज्ञान होने पर शिक्षकों को बालक की समायोजना सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाने में सहायता मिलती है। यदि बालक दूषित वातावरण से आता है, तो शिक्षकों के कर्तव्य है कि वे विद्यालय में स्वस्थ विकास के लिए अनुकूल वातावरण तथा सुविधाएँ प्रदान करें, ताकि उन पर पड़े हुए उनके घर एवं पास-पड़ोस के प्रतिकूल वातावरण को प्रभाव कम हो जाए। शिक्षक को वंशानुक्रम के दूषित वातावरण के कारण किसी बालक की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।
3. विद्यालय में अनुकूल एवं शैक्षिक वातावरण उत्पन्न करने के लिए पुस्तकालय और खेल-कूद व व्यायाम आदि की सुविधा दी जानी चाहिए। विद्यालय में समय-समय पर पाठ्य विषयान्तर क्रियाओं का आयोजन होना चाहिए। इन से बालकों की रुचियों, मूल प्रवृत्तियों तथा अन्य स्वाभाविक आवेगों का समायोजित ढंग से प्रगतीकरण होता है। इस प्रकार की क्रियाओं से युक्त वातावरण का प्रभाव उनकी भावनाओं पर व्यापक रूप से पड़ता है। इस प्रकार इनके चरित्र-निर्माण में वातावरण एक महत्वपूर्ण साधन सिद्ध होता है। इस सम्बन्ध में शिक्षासी फ्रोबेल का कथन है कि. विद्यालय बालक के विकास का वातावरणीय साधन है।"
4. "शैक्षिक उपलब्धियों पर व्यक्तित्व एवं स्वभाव पर वातावरण का अधिक प्रभाव पड़ता है।" यह बात मनोवैज्ञानिक न्यूमैन तथा फ्रीमैन के जुड़वा बच्चों के अध्ययन से स्पष्ट हो गया है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षक को शैक्षिक दृष्टि से कक्षा का वातावरण विशेष रूप से अनुकूल बनाने का प्रयास करना चाहिए।
5. "बालक के विकास की दिशा का वातावरण निश्चित करता है। अनुकूल या प्रतिकूल वातावरण मिलने पर बालक क्रमशः सदाचारी, चरित्रवान या दूराचारी, चरित्रहीन बन सकता है। अतः अभिभावक और शिक्षक ही अनुकूल वातावरण का सृजन कर सकते हैं। इस प्रकार वातावरण से बालक का विकास उचित दिशा की ओर निरन्तर होता रहता है।
6. बालक के विकास में आत्मक्रिया और आत्मप्रकाशन का महत्वपूर्ण स्थान है। इनके लिए उपयुक्त वातावरण मिलना आवश्यक है। शिक्षक ही इन स्वतन्त्र क्रियाओं के लिए मनोवैज्ञानिक वातावरण उत्पन्न कर सकता है। इन क्रियाओं द्वारा बालक की योग्यता, रुचि, रुझान और संवेगों का अध्ययन किया जा सकता है और उसकी आवश्यकतानुसार ही शिक्षा की व्यवस्था की जा सकती है। उपयुक्त वातावरण में बालक की अन्तर्निहित सम्भावनाएँ स्वाभाविक रूप से विकसित होती हैं। वुडवर्थ महोदय ने कहा है, " जिस प्रकार एक मोटर कार के लिए इंजन और पेट्रोल दोनों आवश्यक हैं, उसी प्रकार बालक के विकास के लिए वंशानुक्रम और वातावरण दोनों का समान महत्व है।

विद्यालयीय वातावरण: विद्यालय स्वयं में अनेक छोटे-छोटे समूहों में बना वृहद समूह है। विद्यालय में भिन्न स्थानों, सामाजिक स्तर तथा आयु के बालक होते हैं। यदि ये कहा जाय किं समूह में विषम प्रकृति के व्यक्ति सामान्य उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एकत्र होते हैं, जो अत्युक्ति रहेगी। अध्यापक तथा प्रधानाध्यापक विद्यालय के प्रति सामूहिक भावना का विकास इस प्रकार कर सकते हैं

1. **वातावरण:** विद्यालय के वातावरण का बालक के मस्तिष्क पर बहुत प्रभाव पड़ता है। जिन विद्यालयों का सामाजिक एवं भौतिक वातावरण अच्छा होता है, वहाँ के बालकों का विकास उचित ढंग से होता है। बालक में विद्यालय के प्रति तनाव का आक्रोश नहीं होता। विद्यालयों में धर्म, जाति, प्रजाति, रंग, आर्थिक स्थिति के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए। सभी बालकों के प्रति समान व्यवहार होना चाहिए।
2. **सामूहिक खेल विद्यालयों में सामूहिक खेलों के माध्यम:** से समूह की भावना को विकसित किया जा सकता है वालीबाल, कबड्डी, फुटबाल, खो-खो आदि खेल समूह के भावनाओं को विकसित करने में सहायक होते हैं।
3. **सांस्कृतिक कार्यक्रम:** विद्यालयों में साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से भी सामूहिक भावना का विकास किया जा सकता है। स्काउटिंग, व्याख्यान, वाद-विवाद, अभिनय, पयर्टन आदि से सामूहिक भावना विकसित हो सकती है।
4. **स्वाधीनता:** विद्यालयों में बालकों के विकास एवं सामूहिक भावना की अभिवृत्ति के लिए यह आवश्यक है कि बालकों को कार्य करने की पर्याप्त स्वाधीनता दी जाय छात्र परिसर का कार्य संचालन छात्रावास के नियम आदि बनाने का कार्य छात्रों को ही सौंपना चाहिए प्रेम, सहयोग, सहानुभूति, प्रजातन्व के नियमों का पालन करे ही आदि से सामूहिक भावना को विकसित किया जा सकता है।
5. **सामूहिक आयोजन:** विद्यालयों में सामूहिक आयोजन किये जाने चाहिए।: 26 जनवरी, 15 अगस्त, दो अक्टूबर, 14 नवम्बर आदि आयोजनों को राष्ट्रीय महत्व के रूप में मनाया जाना चाहिए। इससे छात्रों को एक दूसरे के सम्पर्क में आने का अवसर प्राप्त होगा।
6. **अध्यापक की भूमिका:** अध्यापकों को छात्रों के समक्ष अच्छे आदर्श प्रस्तुत 'करने चाहिए। छात्रों से सम्पर्क बनाये रखना चाहिए। छात्रों की वैयक्तिक कठिनाइयों को हल करने में सहयोग देना चाहिए। अध्यापक तथा प्रधानाध्यपकों का छात्रों से सीधा सम्पर्क सामूहिक भावना को विकसित करेगा
7. **योग्यता:** अध्यापकों को इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि छात्रों को जो भी समस्या दी जाय, वह उनकी शारीरिक क्षमता तथा मानसिक योग्यता के अनुसार हो इस प्रकार छात्र समस्या में रुचि लेंगे एवं कार्य के विकास में सहायता मिलेगी, जिससे वे विद्यालय के प्रति सद्भाव रखेंगे। विद्यालय का प्रभाव बच्चों के बौद्धिक विकास पर प्रभाव डालने वाले तत्वों में विद्यालय तथा उनसे सम्बन्धित निम्न कारण उत्तरदायी हैं।

a) **विद्यालय का वातावरण:** विद्यालय के वातावरण का बच्चों के मानसिक व बौद्धिक विकास पर भारी प्रभाव पड़ता है। यदि विद्यालय में छात्र सुरक्षा अनुभव नहीं करते हैं, तो उनके मस्तिष्क में निरन्तर चिंता व भय बना रहता है। जिस विद्यालय में जाति-पांति का प्रश्न आता है, वहाँ पर विभिन्न प्रकार के झगड़े पाये जाते हैं जो बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालते हैं।

b) **अध्यापक का व्यवहार:** अध्यापक का स्थान विद्यालय में बहुत महत्वपूर्ण है, अध्यापक उसका व्यक्तित्व बच्चों के व्यक्तित्व को निरन्तर प्रभावित करता रहता है। यदि अध्यापक का व्यवहार पक्षपातपूर्ण है या वह सामान्य रूप से बच्चों के प्रति सहानुभूति नहीं रखता है या बच्चों को अत्याधिक शारीरिक दण्ड देता है तथा छोटी-छोटी गल्तियों पर बुरा-भला कहता है, ऐसे अध्यापक से बच्चे भयभीत रहते हैं। निरन्तर भय से बच्चों के बौद्धिक विकास पर प्रभाव पड़ता है।

c) **अभिव्यक्ति को अवसर न देना:** जिन विद्यालयों में छात्रों को विचार व्यक्त करने की स्वतन्त्रता नहीं दी जाती है, वहाँ पर छात्र भय के कारण अपने विचार व्यक्त करने की इच्छा का दमन करते हैं। जिससे बच्चों के विकास पर प्रभाव पड़ता है। (4) परीक्षण प्रणाली परीक्षण प्रणाली पर भी बालकों का मानसिक स्वास्थ्य निर्भर 1 करता है। यदि परीक्षा प्रणाली ऐसी है, जिससे बालकों का मूल्यांकन ठीक प्रकार से नहीं हो सकता, तो बालक की योग्यता का सही पता नहीं लगेगा और इस प्रकार बालक वातावरण में अपने आप को समायोजित नहीं कर पायेगा। कभी-कभी तो परीक्षा पद्धति ठीक न होने के कारण कमजोर बालकों का कक्षोत्रति दे दी जाती है और वह सदैव अपनी कक्षा में पिछड़ा रहता है।

d) **अनुचित पाठ्यक्रम:** विद्यालयों में शिक्षा के पाठ्यक्रम उद्देश्यप्रद हैं, इसलिए अनुचित

पाठ्यक्रम से अपेक्षा पूर्ण नहीं होती और जीवन में मानसिक तनाव आ जाता है, जिससे बौद्धिक विकास प्रभावित होता है ।

अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन के उद्देशय निम्नलिखित है।

1. बालक के बौद्धिक योग्यता को ज्ञात करना।
2. बालको में सीखने की प्रक्रिया, कल्पनाशीलता, रचनात्मकता, प्रत्यय ग्रहणशीलता एवं मानसिक व बौद्धिक योग्यता को ज्ञात करना।
3. बालको के विद्यालयीय वातावरण का अध्ययन करना।
4. बालको के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन करना।
5. यह ज्ञात करना है कि प्राथमिक व मदरसा स्कूल के 3-6 वर्ष के बच्चो के बौद्धिक विकास मे तुलनात्मक रूप से क्या अन्तर है।
6. यह ज्ञात करना कि वातावरण, पारिवारिक या विद्यालयीय का बौद्धिक विकास से सम्बन्धित है या नही।

वर्तमान अध्ययन के लिए विभिन्न प्राथमिक तथ्यों का संकलन करने के लिए प्रश्नावली द्वारा बालकों की योग्यता ज्ञात की है। इसके अतिरिक्त औपचारिक वार्तालाप और सूचनादाताओं की व्यक्तिगत, प्रतिक्रिया मनोवृत्ति एवं अनुभव के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण प्राथमिक तथ्य संकलित किए गए है। सीमित मात्रा में केस स्टडी के माध्यम के अध्ययन से गहनता प्रदान की गयी है। द्वितीयक तथ्यों का संकलन जनगणना कार्यालय एवं सूचना कार्यालय द्वारा प्राप्त किया गया ।

तालिका 1: पाठ्य सामग्री से अतिरिक्त बौद्धिक विकासात्मक सामग्री के ज्ञान के आधार पर विद्यार्थियो का वर्गीकरण

विकासात्मक सामग्री	स्कूल का माध्यम			
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
किताबें	20	20.00	30	30.00
पत्रिकाएँ	2	2.00	4	4.00
कहानियाँ	10	10.00	80	80.00
कविताएँ	90	90.00	95	95.00
कैसेट	99	99.00	98	98.00
सी0डी0	51	51.00	45	45.00
अन्य सृजनात्मक खेल	100	100.00	100	100.00

Chi square = 50.33, D.F. = 6, $p<0.01$

पाठ्य सामग्री के अतिरक्त बच्चो का सबसे अधिक रूझान, कविता कहानी पढ़ने में तथा सृजनात्मक खेल मे लगता है, जिससे वह अकेले भी खेलते है। डगलस तथा हौलेण्ड ने अपनी पुस्तक "एजुकेशन सॉकोलॉजी" में वातावरण शब्द का व्याख्या इस प्रकार की है, वातावरण वह शब्द है जो समस्त बाहा शक्तियो, प्रभावो और रूचियो, परिस्थितियो का सामूहिक रूप से वर्णन करता है, जो जीवधारी के जीवन, स्वभाव व्यवहार और अभिबृद्धि, विकास और प्रौणता पर प्रभाव डालता है। पाठ्य सामग्री के अतिरिक्त बौद्धिक विकासात्मक सामग्री भी ज्ञान बढ़ाने मे सहायक है जैसे – किताबें, पत्रिका, कहानियाँ, कैसेट, सी0डी0 आदि भी बौद्धिक क्षमता पर प्रभाव डालता है। समय-समय पर उपलब्ध कराते रहना चाहिए।

तालिका 2: बच्चो के आदतों के आधार पर वर्गीकरण।

बच्चो की आदतों के आधार पर	स्कूल का माध्यम					
	प्राथमिक		मदरसा		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
अपना कार्य स्वयं करना	30	30.00	30	30.00	60	30.00
सुबह जल्दी उठना	15	15.00	20	20.000	35	17.50
स्वयं से पढ़ना	25	25.00	20	20.00	45	22.50
सहयोग द्वारा पढ़ना	10	10.00	4	4.00	14	7.00
क्रियात्मक कार्य करना	15	15.00	10	10.00	20	10.00
भोजन संबंधी आदतें	5	5.00	8	8.00	13	6.50
अपना वस्त्र स्वयं पहनना	5	5.00	8	8.00	13	6.50
योग	100	100.00	100	100.00	200	100.00

Chi square = 5.22, D.F. = 6, Not Significant

तालिका संख्या 2 के अनुसार आदतो के आधार पर विद्यार्थियो का वर्गीकरण किया गया है, जिसमे स्वयं अपना कार्य करने में प्राथमिक के 30 व मदरसा के 30 विद्यार्थी है, जो कुल 60% है। सुबह जल्दी उठना मदरसा एवं प्राथमिक दोनो मे 45% एवं सहयोग द्वारा पढ़ने में 14%, क्रियात्मक कार्य करने मे विद्यार्थियों की

संख्या 20% है। भोजन संबंधी आदतो में विद्यार्थियों की संख्या प्राथमिक एवं मदरसा में 13% है।

Savvidson (1960) के अध्ययन के अनुसार प्राथमिक स्कूल के अनुभवो और बच्चों से स्वयं के प्रति प्रत्यक्षीकरण में घनिष्ट संबंध है। इस अध्ययन में देखा गया है कि शिक्षक की दृष्टि मे वह अच्छे बच्चे है। ऐसे बच्चो का व्यवहार अधिक उपयुक्त होता है तथा ऐसे बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि भी अपेक्षाकृत अधिक होती है। बच्चो के सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास में स्कूल के साथी समूह का प्रभाव सर्वाधिक पड़ता है।

तालिका 3: विद्यार्थियो के पारिवारिक अनुशासन के आधार पर वर्गीकरण।

विद्यार्थियो के पारिवारिक अनुशासन के आधार पर	स्कूल का माध्यम					
	प्राथमिक		मदरसा		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
अति संरक्षणात्मक	10	10.00	30	30.00	40	40.00
प्रतिस्पर्धा	10	10.00	10	10.00	20	20.00
प्रेरित करना	10	10.00	20	20.00	30	30.00
रूचि विकसित करना	25	25.00	15	15.00	40	40.00
स्वास्थय का ध्यान देना	20	20.00	10	10.00	30	15.00
नैतिक शिक्षा का ध्यान देना	20	20.00	10	10.00	30	15.00
गलतियो का सुधार करना	5	5.00	5	5.00	10	5.00
योग	100	100.00	100	100.00	200	100.00

Chi square = 25.5, D.F. 6, p<0-01

उपरोक्त तालिका संख्या 3 में विद्यार्थियों के पारिवारिक अनुशासन के आधार पर छात्रों का वर्गीकरण किया गया है, जिसमें सर्वप्रथम अति संरक्षणात्मक है, जिसके प्राथमिक एवं मदरसा के 40% है। द्वितीय श्रेणी में प्रतिस्पर्ध है, जिसमे प्राथमिक एवं मदरसा के 20% है। तृतीय श्रेणी में प्रेरित करने वालो का है जिसमे दोनो विद्यालयों के 30% है। रूचि विकसित करने वालो में प्राथमिक एवं मदरसा स्कूल के 40% है। स्वास्थय को ध्यान देने में प्राथमिक एवं मदरसा के 30% है। गलतियो का सुधार करने में 10% है सबसे अधिक संख्या अति संरक्षणात्मक वालो की है।

पियाजे महोदय ने छोटे – छोटे बालको का अध्ययन किया और वे इस निर्णय पर पहुँचे कि 3 से 4 वर्ष की उम्र तक उनमें किसी वस्तु के प्रति कर्तव्य भावना एवं सही अथवा गलत की धारणा उन प्रौढ़ व्यक्तियो की मान्यता के आधार पर होती है। जिनकी वह इज्जत करता है।

तालिका 4: परिवार के स्वरूप के आधार पर विद्यार्थियो का वर्गीकरण।

परिवार का स्वरुप	स्कूल का माध्यम					
	प्राथमिक		मदरसा		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
एकाकी परिवार	40	40.00	80	80.00	120	60.00
संयुक्त परिवार	60	60.00	20	20.00	80	40.00
योग	100	100.00	100	100.00	200	100.00

Chi square = 33.33, D.F. = 1, p<0.01

उपरोक्त तालिका संख्या 4 में परिवार के स्वरूप के आधार पर विद्यार्थियो का वर्गीकरण इस प्रकार है। सर्वप्रथम एकाकी परिवार है जिसमें प्राथमिक एवं मदरसा स्कूल मे 120 है। एवं संयुक्त परिवार में प्राथमिक एवं मदरसा स्कूलों में 80 है सबसे अधिक एकाकी परिवारो का है। जिसमें संख्या 120 है। वातावरण का प्रभाव बच्चो पर स्पष्ट पड़ता है। फ्रीमैन वकर्स एवं स्कील्स के अध्ययन इस प्रकार का संकेत करते है कि उन बालको ने, जो दूषित वातावरण से अच्छे वातावरण में लाए गए, आई0 क्यू0 में उन्नति प्रदर्शित की। जितनी का आयु में वह अच्छे वातावरण में परिवर्तित हुई, उतना ही अधिक उन्नति उनको द्वारा प्रदर्शित की गई।

तालिका 5: विद्यालीय अनुशासन के आधार पर विद्यार्थियो का वर्गीकरण।

विद्यालयीय अनुशासन के आधार पर	स्कूल का माध्यम					
	प्राथमिक		मदरसा		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
कान पकड़कर सजा देना	20	20.00	10	10.00	30	15.00
कक्षा से बाहर	40	40.00	40	40.00	80	40.00
अनुपस्थित कर देने का भय उत्पन्न करना	10	10.00	5	5.00	15	7.50
खड़े करना या अन्य	5	5.00	10	10.00	15	7.50
माता पिता से शिकायत करना	10	10.00	15	15.00	25	12.50
अध्यापक का मित्रवत व्यवहार	15	15.00	20	20.00	35	17.50
योग	100	100.00	100	100.00	200	100.00

Chi square = 8.38, D.F. = 5, Not Significant

तालिका संख्या 5 के अनुसार विद्यालयीय अनुशासन के आधार पर वर्गीकरण के अन्तर्गत सर्वप्रथम कठोर सजा देना, जिसमे प्राथमिक एवं मदरसा स्कूलो के 30% है। कक्षा से बाहर निकाल देना, जिसमें प्राथमिक मदरसा के 80% है अनुपस्थित कर देना प्राथमिक एवं मदरसा के 15% है खड़े करना या अन्य जिसमें दोनो विद्यालयों में 15% है। माता पिता से शिकायत करना, जिसमें प्राथमिक एवं मदरसा के 25% है। एवं अध्यापक का मित्रवत् व्यवहार, जिसमें प्राथमिक एवं मदरसा के 35% है। सबसे अधिक संख्या कक्षा से बाहर निकालने की है। जो 80% है। बी. कूप्पूस्वामी का विचार है कि जब बालक निम्न वर्ग से संबंधित होते है। तो बालकों और अध्यापको के मूल्य में खाई होती है। ऐसा बालक या तो शिक्षको की आज्ञा का पालन नही करता या अक्रामक रवैया अपना लेता है। या उदासीन हो जाता है। अथवा कक्षा में अनुपस्थित रहता है। ऐसे विद्यार्थी धीमी गति से सीखते है इससे अध्यापक उन से उब जाते है या उनसे निराश हो जाते है। इस प्रकार अध्यापक व विद्यार्थी दोनो एक दूसरे को स्वीकार नही करते।

तालिका 6: विद्यालय द्वारा आयोजित पाठ्योत्तर क्रिया- कलापो में बच्चो के सहभागित के आधार पर विद्यार्थियो का वर्गीकरण।

विद्यालय द्वारा आयोजित पाठ्योत्तर क्रिया-कलाप के आधार पर	स्कूल का माध्यम			
	प्राथमिक		मदरसा	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
भाषण प्रतियोगिता	20	20.00	20	20.00
क्विज	5	5.00	50	50.00
डिवेट	5	5.00	75	75.00
सामान्य ज्ञान	10	10.00	90	90.00
प्रदर्शिनी	15	15.00	65	65.00
कम्प्यूटर	15	15.00	100	100.00
नैतिक कहानियाँ	50	50.00	50	50.00
वाद विवाद	10	10.00	85	85.00
चित्रकला	25	25.00	80	80.00
संगीत गायन	5	5.00	100	10.00

Chi Square = 130.65, D.F. = 9, $p<0.01$

पाठ्योत्तर क्रिया कलाप में बच्चे की रूचि अधिकतर भाषण प्रतियोगिता में, डिबेट में, वाद – विवाद मे, स्कूलों में बच्चो की अधिक है। अपेक्षाकृत प्राथमिक विद्यालय के परन्तु स्कूलो में कम्प्यूटर, संगीत चित्रकला, पाठ्य विषय होने के कारण उन्हे सीखाया जाता है। इसलिए इसका प्रतिशत भी प्राथमिक विद्यालयों से अधिक है।

W. Emmeric (1966) के अध्ययन के अनुसार स्कूल मे वे बच्चे स्कूल के कार्यक्रमो में अधिक भाग लेते है, जो अधिक लोकप्रिय होते है। सामाजिक कार्यक्रमो और समाज के व्यक्तियों के प्रति बालक में जो एक अभिवृत्ति निर्मित हो जाती है, वह सभी आयु समूहो में स्थिर सी रहती है। एक बार बालक का सामाजिक

व्यवहार नव निर्मित हो सकता है। सामाजिक अभिवृत्तियाँ नही।

अतः स्पष्ट है कि बच्चो को सभी प्रकार की प्रतियोगिताओ जैसे – क्विज, डिवेट, भाषण प्रतियोगिता, खेल, संगीत आदि में भाग लेना चाहिए।

तालिका 7: विद्यालयीय शिक्षा के आधार पर विद्यार्थियो का वर्गीकरण।

विद्यालयीय परीक्षा के आधार पर	स्कूल का माध्यम					
	प्राथमिक		मदरसा		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
मानसिक परीक्षण टेस्ट	20	20.00	20	20.00	40	20.00
अर्द्धवार्षिक परीक्षा	30	30.00	30	30.00	60	30.00
वार्षिक परीक्षा	50	50.00	50	50.00	100	50.00
योग	100	100.00	100	100.00	200	100.00

Chi Square = .000, D.F. 2, Not significant

उपयोक्त तालिका संख्या 7 में विद्यालयीय परीक्षा के आधार पर विद्यार्थियो का वर्गीकरण किया गया है। मासिक परीक्षा प्राथमिक एवं मदरसा स्कूल में 40% एवं अर्द्धवार्षिक परीक्षा में प्राथमिक एवं मदरसा में 60% एवं वार्षिक परीक्षा में 50% एवं मदरसा में 50% है। दोनो विद्यालयों में वार्षिक परीक्षा 100% है। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला गया है कि अर्द्धवार्षिक परीक्षाएँ मदरसा एवं प्राथमिक दोनो में अकसर होती है। मासिक परीक्षाए भी 40% होती है।

N.A. flamder ct-at – 1968, T. Poffen largers D. Narton (1963) के अध्ययन के अनुसार बालको को विद्यालय परीक्षाओ में प्राप्ताँक अच्छे नही होते है, उनमें विद्यालय के प्रति रुचि विपरीत प्रकार की होती है। इस प्रकार जो विद्यार्थी पढ़ने में तेज होते है। उनका समायोजन अच्छा होता है और उनमें विद्यालय के प्रति धनात्मक रूचि का विकास होता है। अतः इससे यह स्पष्ट होता है कि बालको के विद्यालय में परीक्षाओं का समायोजन होने से उनकी योग्यताओ का पता चलता है एवं प्रतिस्पर्धा से बच्चे एक दूसरे से अच्छा अंक पाने की इच्छा रखते है।

तालिका 8: पाठ्य सामग्री के रूचि के आधार पर विद्यार्थियो का वर्गीकरण।

पाठ्य सामग्री के आधार पर सीखने की प्रक्रिया	स्कूल का माध्यम			
	प्राथमिक		मदरसा	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
प्रयोग करके सीखना (Practical)	50	50.00	50	50.00
	75	75.00	80	80.00
अनुकरण करके सीखना	25	25.00	80	80.00
खेल के द्वारा सीखना	5	5.00	98	98.00
अन्य	15	15.00	30	30.00

Chi square = 70.04, D.F. = 4, $p<0.01$

तालिका संख्या 8 के अनुसार पाठ्य सामग्री के रूचि के आधार पर विद्यार्थियो का वर्गीकरण किया गया है। सर्वप्रथम करके सीखना है इसमें प्राथमिक एवं मदरसा के 50% है। तत्पश्चात अनुकरण करके सीखना में प्राथमिक और मदरसा स्कूलो के 55% है एवं खेल के द्वारा में दोनो स्कूलो में 15% है, अन्य साधन में प्राथमिक एवं मदरसा के 25% है।

निष्कर्ष: अध्ययन मे पाठय साम्रगी के अतिरिक्त बौद्धिक विकासात्मक साम्रगी के ज्ञान के आधार पर किताबे प्राथमिक स्कूल मे 20% एव मदरसा स्कूल मे 30% दिए जाते है। कैसेट एवं सी0डी0 भी कई प्राथमिक एवं मदरसा स्कूलो मे दिखाई जाती है। सी0डी0 प्राथमिक मे 51% एवं मदरसा मे 45% दिखाई जाती है। पाठ्य साम्रगी के अतिरिक्त बच्चों को सबसे अधिक रूझान, कविता, कहानी पढ़ने में तथा सृजनात्मक खेल मे लगता है। जिसमे वह अकेले रहते है।

इस अध्ययन के अन्तर्गत बच्चो का जो अपने आप सारा कार्य स्वयं करते है या नही करते है? तो उनकी संख्या

इस प्रकार है। प्राथमिक में 30% एवं मदरसा मे भी 30% विद्यार्थी स्वयं अपना कार्य करना पसन्द करते है कुछ विद्यार्थी स्वयं पढ़ना पसन्द समझते है। प्राथमिक 25% एवं मदरसा के 20% है। सहयोग के द्वारा भी विद्यार्थी पढ़ना पसन्द समझते है। 10% प्राथमिक एवं 4% मदरसा मे क्रमशः अपना वस्त्र स्वयं पहनने वालो में विद्यार्थियों की संख्या प्राथमिक एवं मदरसा दोनो मिलाकर 13% है।

वर्तमान अध्ययन के विद्यार्थियो के पारिवारिक अनुशासन को अधिक देखा गया है। जिसमे अति संरक्षणात्मकता के अन्तर्गत प्राथमिक के 10% एवं मदरसा के 30% बच्चे आते है स्वास्थय का ध्यान देने वालो में 30% लोग है जिसमे 20% प्राथमिक एवं 10% मदरसा स्कूलो के है।

अध्ययन के अनुसार परिवार स्वरुप के आधार पर बच्चो मे एकाकी परिवार से 120% है, जिसमें प्राथमिक 40% एवं मदरसा के 80% है, एवं 80% संयुक्त परिवार, जिसमें 20% मदरसा एवं 60% प्राथमिक विद्यालयों के बच्चे है। सबसे अधिक संख्या एकाकी परिवारो की है।

वर्तमान अध्ययन में विद्यालयीय अनुशासन के साथ बच्चो की संख्या का अध्ययन किया गया है जिसमे सजा देना, कान पकड़ना, 30% है, जिस में 20% प्राथमिक एवं मदरसा के 10% बच्चे है। 80% बच्चे कक्षा से बाहर निकाले जाते है। माता-पिता से शिकायत करने में 10% प्राथमिक एवं 15% मदरसा मे है। अध्यापक मित्रवत व्यवहार से 35% है।

अध्ययन के अनुसार पाठ्योत्तर क्रिया-कलापो में बच्चो की रूचि अधिकतर भाषा प्रतियोगिता में डिबेट में, वाद विवाद में मदरसा के बच्चो की अधिक है। अपेक्षाकृत प्राथमिक विद्यालय के है। परन्तु मदरसा स्कूलो में कम्प्यूटर, संगीत, चित्रकला पाठ्य विषय होने के कारण उन्हे सिखाया जाता है। भाषण प्रतियोगिता में प्राथमिक एवं मदरसा में 20% - 20% है क्विज, डिवेट प्राथमिक में 50% -50% एव मदरसा में 50% -75% है। संगीत गायन प्राथमिक में 50% एवं मदरसा में संगीत गायन की पूरी –पूरी शिक्षा दी जाती है जो 100% है।

वर्तमान अध्ययन के अनुसार विद्यालयीय परीक्षा के आधार पर विद्यार्थियो का वर्गीकरण है। मासिक परीक्षा 40% है, प्राथमिक मे 20% एवं मदरसा में भी 20% है अर्द्ध वार्षिक परीक्षा प्राथमिक एवं मदरसा दोनो मे 30% -30% है वार्षिक परीक्षा प्राथमिक एवं मदरसा स्कूल दोनो में 50% -50% है।

वर्तमान अध्ययन पाठय सामग्री के रूचि के आधार पर है। सर्वप्रथम करके सीखना है, इसमें प्राथमिक एवं मदरसा में 50% है तत्पश्चात अनुकरण करके सीखना इसमे प्राथमिक में 75% एवं मदरसा में 80% है। एवं खेल के द्वारा सीखने में दोनो में 25% एवं 80% है अन्य दृश्य साधन में प्राथमिक एवं मदरसा के 50% एवं 98% है। अन्य में प्राथमिक 15% एवं मदरसा 30% है।

संदर्भ

1. Jencks CS, Smith M, Acland H, Bare MJ, Cohen D, Ginits N, et al. Inequality: A Reassessment of the effect of family and schooling in America. New York: Basic Books; c1972. p. 213.
2. Mellrath D, Huitt W. The teaching/learning process: A discussion of models. Valdosta, GA: Valdosta State University; c1995.
3. National Centre for Education Statistics. Digest of Educational Statistics. Washington, DC: U.S. Department of Education; c2000.
4. National Commission on Excellence in Education. A Nation at Risk: The imperative for educational reform. Washington, DC: U.S. Department of Education; c1983. Retrieved May 2003, from http://www.ed.gov/pules/NatAtRisk.
5. Perelman L. School's out: Hyperlearning, The new technology and the end of education. New York: William Morrow; c1992.
6. Proctor C. Teacher expectation: "A model for school improvement." The Elementary School Journal. 1984 Mar; 469-481.
7. Rosershine B, Stevens R. Teaching functions. In: Wittrock M, editor. Handbook of Research on Teaching. 3rd ed. New York: Macmillan; c1986. p. 376-391.
8. Slavin R. Co-operative learning and inter-group relations. In: Barks J, editor. Handbook of Research on Multicultural Education. New York: Macmillan; c1995.
9. Slavin R. Educational Psychology: Theory and Practice. 7th ed. Boston: Allyn & Bacon; c2003.
10. Squires D, Huitt W, Seqars J. Effective classrooms and schools: A research-based perspective. Washington, D.C.: Association for Supervision and Curriculum Development; c1983.

11. Toffler A, Toffler H. Creating new civilization. New York: Turneu Publishing; c1995.
12. Voelkl K. Achievement and expectations among African-American students. Journal of Research and Development in Education. 1993;27(1):42-55.
13. Walberg N. Synthesis of research on teaching. In: Wittrock M, editor. Handbook of Research on Teaching. New York: Macmillan; c1986. p. 214-229.
14. Zill N. Trends in family life and children's school performance. Washington, DC: Child Trends, Inc.; c1992. (ERIC Reproduction No. ED378257).